ॐ जय चंद्रप्रभु देवा, स्वामी चंद्रप्रभु देवा ।
तुम हो विघ्न विनाशक, पार करो खेवा ।। ॐ
मात सुलक्ष्मणा पिता तिहारे, महासेन देवा ।
चंद्रपुरी में जन्म लिया है, देवों के देवा ।। ॐ
जन्म महोत्सव पर प्रभु तिहारे, सुर वंदन आए ।
बाल्य-काल की लीला, लख लख हर्षाए ।। ॐ
राज्य-काल की न्याय-नीति तो, सबके मन भाई।
क्षण भंगुर, जग-जाल जान फिर, आतम सुध लाई।। ॐ
फाल्गुन वदि सप्तमी को, केवल ज्ञान हुआ ।
खुद जिओ, जीने दो सबको, यह संदेश दिया ।। ॐ
अलवर प्रांत में नगर तिजारा, देहरे में प्रगटे ।
दुख कटें, तुम नाम जपत ही, सुख ही सुख मिलते ।। ॐ
दीन बंधु करुणा निधान अब, आया तव द्वारे ।
जन्म मरण दुख हरो हमारा, शरण पडा थारे ।। ॐ
ॐ जय चंद्रप्रभु देवा, स्वामी चंद्रप्रभु देवा ।
तुम हो विघ्न विनाशक, पार करो खेवा ।। ॐ